एक प्रचारक जिसकी प्रशंसा किए बिना मैं नहीं रह सकता (18:24-28)

हम में से बहुत से लोग कुछ खास प्रचारकों को पसन्द करते हैं। यदि मुझे अपने पसंदीदा प्रचारकों की सूची बनानी हो तो मैं सम्भवत: क्लुविस रोड्स के नाम से आरम्भ करूंगा, जिसने मेरी जवानी को बहुत प्रभावित किया था।[1] मैं सूची में कहीं पर, जॉर्ज डब्ल्यू. बेली का नाम शामिल करूंगा। मुझे 1 कुरिन्थियों 13 अध्याय पर उसका संदेश बड़ी अच्छी तरह याद है। बैटसल बैरेट बैक्सटर का नाम, जिसने अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी में प्रचार करने पर एक शृंखला में प्रवचन दिए, मेरी सूची में होगा। मैं अपनी सूची में टी.बी. लैरिमोर का नाम भी शामिल कर सकता हूं जिसके बारे में मैं केवल उसकी किताबों से ही जानता हूं।

इन लोगों की प्रशंसा करने का एक कारण सच्चाई से उनका प्रेम है: इनमें से हर एक ने सच्चाई का प्रचार करने के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया। परन्तु, यहां एक ऐसा प्रचारक भी है जिसकी प्रशंसा किए बिना मैं नहीं रह सकता, जिसने थोड़ी देर के लिए सही और गलत दोनों का प्रचार किया। यह आदमी हमें प्रेरितों के काम के अध्याय 18 में मिलता है; उसका नाम अपुल्लोस है।

अध्याय 18 की आयत 23 पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के विषय में बताते हुए आरम्भ होती है: ''फिर कुछ दिन [सीरिया के अन्ताकिया में] रहकर वहां से चला गया, और एक ओर से गलतिया और फ्रूगिया में सब चेलों को स्थिर करता फिरा।'' उसका अन्तिम ठिकाना इफिसुस था (19:1)। तथापि, लूका ने पौलुस के इस राजधानी नगर में पहुंचने के बारे में बताने से पहले पौलुस के दो बार जाने के अंतराल में होने वाली बातें बताने के लिए और हमें उसके इफिसुस में पहुंचकर देखने की स्थिति के लिए तैयार करने के लिए अपुल्लोस की कहानी जोड़ दी।

आयत 24 आरम्भ होती है, ''अपुल्लोस[2] नामक एक यहूदी जिसका जन्म[3] सिकन्दरिया

में हुआ था, जो विद्वान पुरुष था और पवित्र शास्त्र को अच्छी तरह से जानता था, इफिसुस में आया।'' इस प्रकार हमारा परिचय अपुल्लोस से करवाया जाता है जो आरम्भिक कलीसिया में सुसमाचार का प्रसिद्ध प्रचारक अर्थात इवैंजलिस्ट बना (1 कुरिन्थियों 3:5, 6; तीतुस 3:13)। यद्यपि उसके माता-पिता यहूदी थे, उसका जन्म सिकन्दरिया में हुआ था जो नील नदी[4] से कुछ मील की दूरी पर स्थित एक प्रसिद्ध[5] नगर तथा मिस्र की बन्दरगाह था। सिकन्दरिया, जिसे सिकन्दर महान ने बसाया था और उसी के नाम से जाना जाता था, में यहूदियों की काफ़ी जनसंख्या थी।[6] पुराने नियम का यूनानी अनुवाद, जिसे सप्तति अनुवाद कहा जाता है, सिकन्दरिया में ही तैयार हुआ था। प्रसिद्ध यहूदी शिक्षक, फिलो सिकन्दरिया में ही रहता था।[7] अपुल्लोस को केवल यूहन्ना के बपतिस्मे का ही पता था (आयत 25), इसलिए हो सकता है कि उसने वहां पर पौलुस की तरह एक युवक के रूप में फलस्तीन में कुछ समय रहकर अध्ययन किया हो।[8]

अपुल्लोस के विषय में पढ़कर, मुझे उसके बहुत से गुणों का पता चलता है जिनके कारण मैं उसकी सराहना करता हूं। मैं आपको समझाता हूं कि मेरे कहने का क्या अर्थ है।

उसने प्रभु के लिए अपनी योग्यताएं अर्पित कर दीं (18:24-26)

लूका द्वारा अपुल्लोस के वर्णन से पता चलता है कि वह काफ़ी पढ़ा-लिखा था। सिकन्दरिया में बड़े होने और शायद फलस्तीन में समय व्यतीत करने के कारण, उसे अपने समय की सबसे अच्छी सामाजिक और धार्मिक शिक्षा मिली थी। फिर, लूका द्वारा अपुल्लोस की विद्वता और जोश की बात लोगों को समझाने की उसकी योग्यता पर मुहर लगा देती है।[9] मैं ऐसे गुणों वाले आदमी की प्रशंसा करता हूं। (यदि मुझ में अपुल्लोस की विद्वता हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।)

तथापि, सबसे बढ़कर मैं अपुल्लोस की सराहना इसलिए करता हूं क्योंकि उसने परमेश्वर की सेवा के लिए अपने बहुत से गुणों को अर्पित कर दिया। ''उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी''[10] (आयत 25) और वह ''पवित्र शास्त्र [पुराने नियम] को अच्छी तरह से जानता था'' (आयत 24)। वह जानता था कि ''प्रचारक'' कहलाने के लिए पहली आवश्यकता पवित्र शास्त्र को जानने की थी! फिर, बोलने की उसकी योग्यता वचन के प्रचार के लिए अर्पित थी। ''वह आराधनालय में'' (आयत 26) ''यीशु के विषय में'' (आयत 25) सुनाता था। इससे भी बढ़कर, उसका समर्पण ऐसा था कि वह केवल बोलने से ही संतुष्ट नहीं था; बल्कि, उसने उन बातों को अपने *मन* में बिठा लिया था। वह ''मन लगाकर''[11] (आयत 25) और ''निडर होकर'' (आयत 26) बोलता था।

24 से 26 आयतों को प्रचार के लिए मिनी कोर्स के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। परन्तु, यदि आपकी न प्रचार करने की और न ही प्रचारक बनने की कोई योजना है, तो भी अपनी योग्यताओं को परमेश्वर की महिमा के लिए अर्पित करने का सिद्धांत

आप पर लागू होता है। परमेश्वर ने आपको अपने स्वार्थी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए ये योग्यताएं नहीं दी हैं। आप जीवन में अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए इन योग्यताओं को न्याय संगत ढंग से इस्तेमाल कर सकते हैं (1 तीमुथियुस 5:8), परन्तु यह कभी न भूलें कि आपकी योग्यताएं प्रभु को महिमा देने के लिए इस्तेमाल की जानी चाहिए (मत्ती 5:16)।

जो कुछ वह विश्वास करता था उसका उसने निडर होकर प्रचार किया (18:25, 26)

जिस समय अपुल्लोस के साथ हमारा परिचय करवाया जाता है, तब प्रभु की इच्छा को समझने की उसकी समझ सीमित थी। वह पुराने नियम के पवित्र शास्त्र (आयत 24) के साथ उन पुस्तकों को जिनमें मसीहा के आने की बातें शामिल थीं जानता था (आयत 28) कुछ हद तक, वह ''यीशु के विषय में ठीक-ठीक'' (आयत 25) बता और सिखा भी सकता था। परन्तु, हम पढ़ते हैं कि वह ''केवल यूहन्ना के बपतिस्मा को ही जानता था'' (आयत 25)। स्पष्ट है कि यीशु के बारे में उसका ज्ञान केवल उतना ही था जितना यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को। यीशु द्वारा अपनी कलीसिया बनाने का वायदा (मत्ती 16:16-19) करने और यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान, ग्रेट कमिशन देने, और स्वर्ग में उठाये जाने से बहुत पहले यूहन्ना की हत्या हो गई थी (मत्ती 14:1-12)। यूहन्ना ने आत्मा के आने के बारे में बताया था (मत्ती 3:11), परन्तु उसे उस प्रतिज्ञा के पूरा होने (प्रेरितों 1:4-8; 2:1-4), कलीसिया की स्थापना, अथवा मसीही आराधना के विषय में कुछ भी पता नहीं था।

लूका ने यह नहीं बताया कि अपुल्लोस को यूहन्ना के बपतिस्मे का कैसे पता चला या प्रभु के बारे में उसका ज्ञान अधूरा क्यों था। शायद यूहन्ना की सेवकाई के दिनों में अपुल्लोस फलस्तीन में था और उसका चेला बन गया था (मत्ती 3:5, 6) या शायद मिस्र में यूहन्ना के किसी चेले ने उसे वहां सिखाया होगा।[12] यदि वह फलस्तीन में यूहन्ना का चेला बना था, तो शायद सुसमाचार के फैलने से पहले ही वह देश से चला गया था। लगता है कि अपुल्लोस पिन्तेकुस्त के दिन से ही फलस्तीन में नहीं था (प्रेरितों 2), न ही उसका सम्पर्क किसी ऐसे व्यक्ति से हुआ जो यीशु और उसके मार्ग के बारे में अच्छी तरह जानता हो।[13] इसलिए, उसने उतना ही प्रचार किया जितना वह जानता था अर्थात यूहन्ना के बपतिस्मे का।

यूहन्ना के बपतिस्मे के बारे में कुछ बातें क्रम में हैं। यूहन्ना का आना भविष्यवाणी के अनुसार मसीह का मार्ग तैयार करने के लिए हुआ (यशायाह 40:3; मलाकी 4:5, 6; मत्ती 3:1-3; 17:10-13)। अपनी तैयारी के एक भाग के रूप में, उसने अपने सुनने वालों को मन फिराने और अपने जीवन बदलने की आज्ञा दी (मत्ती 3:2; लूका 3:7-14), और वह तैयारी का बपतिस्मा देता था (मत्ती 3:5, 6)। वह ''पापों की क्षमा'' (मरकुस 1:4) के लिए पानी में डूब का बपतिस्मा देता था (यूहन्ना 3:3)। इसे ''मन फिराव का बपतिस्मा'' कहा जाता था (मरकुस 1:4; प्रेरितों 13:24; 14:4) क्योंकि इसमें मन फिराव की झलक दिखाई देती थी। उसके पास आने वाले ''अपने-अपने पापों को मानकर यरदन

नदी में उससे बपतिस्मा'' लेते थे (मत्ती 3:6)। बपतिस्मा यूहन्ना की सेवकाई का इतना बड़ा भाग था कि वह ''बपतिस्मा [अर्थात डुबकी] देने वाला'' (मत्ती 3:1) के रूप में प्रसिद्ध था। यूहन्ना की सेवकाई के दौरान, उसके बपतिस्मे से परमेश्वर के उद्देश्यों को स्वीकार करने के इच्छुक और उन्हें स्वीकार न करने वाले लोगों में एक विभाजक बिन्दु बन गया (लूका 7:30)।

जहां तक हमारे वर्तमान अध्ययन का सम्बन्ध है, यूहन्ना के बपतिस्मे के बारे में याद रखने वाली मुख्य बात यह है कि यह कभी भी मसीही युग के लिए परमेश्वर की योजना का स्थाई भाग नहीं था। ग्रेट कमिशन अर्थात स्वर्गारोहण से पहले ही यीशु की आज्ञा का बपतिस्मा ''जगत [मसीही युग] के अन्त तक'' (मत्ती 28:20) रहने वाला है और यह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से दिया जाता है (मत्ती 28:19, 20; मरकुस 16:15, 16)। इसलिए, यह परमेश्वर की योजनाओं तथा उद्देश्यों के लिए ''एक ही बपतिस्मा'' (इफिसियों 4:5) है। यूहन्ना का बपतिस्मा ग्रेट कमिशन के प्रचार के आरम्भ और व्यवहार में आने तक ही था (प्रेरितों 2); उसके बाद उसकी कोई वैधता नहीं रही। यूहन्ना के बपतिस्मे में एक कमी यह थी कि यह यीशु के अधूरे ज्ञान की भविष्यवाणी था। यूहन्ना अपने अनुयायियों को केवल यह आदेश दे सकता था कि ''जो मेरे बाद आने वाला है उस पर अर्थात यीशु पर विश्वास करना'' (19:4)।[14]

परन्तु, जिस तथ्य पर मैं ज़ोर देना चाहता हूं, वह यह है कि यद्यपि वह बपतिस्मा जिसके बारे में अपुल्लोस को पता था, वह मान्य नहीं था, परन्तु उसने वही प्रचार किया जिस पर समझ और जोश के साथ उसने विश्वास किया। अगले अध्याय के आरम्भिक भाग में पता चलता है कि उसने इफिसुस में प्रचार करके बहुत से लोगों को परिवर्तित भी किया था (19:1-6)।

मैं जल्दी से कह दूं कि मैं अपुल्लोस की सराहना इसलिए नहीं करता *कि* उसने गलती का प्रचार किया; गलती आत्मा के नाश का कारण हो सकती है (याकूब 5:20)। मैं यह भी नहीं मानता कि उसने अज्ञानता में परमेश्वर को प्रसन्न किया; अज्ञानता से पाप की गम्भीरता कम नहीं हो जाती (प्रेरितों 17:30; रोमियों 10:1-4 भी देखिए)। जल्दी ही, मैं ज़ोर दूंगा कि मैं अपुल्लोस की सराहना इसलिए करता हूं कि वह गलती नहीं करता रहा, क्योंकि उस का हृदय एक शिक्षक का था। अब, मुझे कहने दें कि मैं उसका आदर एक ऐसा व्यक्ति होने के कारण करता हूं जिसने अपने मन की बात मानी। जब मैं टेलीविज़न देखता हूं, तो मुझ पर असंख्य धर्मों का आक्रमण होता है। कुछ प्रचारकों का मैं आदर कर सकता हूं, बेशक मेरा मानना है कि वे गलती में हैं; स्पष्ट है कि जो कुछ वे कर रहे हैं, उसे निष्कपट मन से कर रहे हैं। दूसरों का मैं कदापि आदर नहीं कर सकता; जिनके कामों से पता चलता है कि वे बेईमान अवसरवादी हैं, उन्होंने सुसमाचार को व्यापार बना दिया है (मत्ती 7:20; 2 पतरस 2:3)।

केवल निष्कपट होना ही काफ़ी नहीं है। पौलुस मसीहियों को निष्कपटता से ही सता रहा था (प्रेरितों 23:1), परन्तु कपट से भरे जगत में, शुद्ध मन वाले लोगों को पाकर राहत

का अहसास होता है। किसी विश्व नेता के बारे में कहा गया है कि वह जनमत संग्रह के आधार पर सरकार चलाता था, और कई धार्मिक नेता उसकी नकल करके उसी सिद्धांत पर काम करते हैं। वे किसी प्रसिद्ध बात के ''... हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते'' (इफिसियों 4:14) हैं। जब मैं किसी को विरोध के बावजूद अपने धार्मिक विश्वास में अडिग देखता हूं, तो मेरे मन में विचार आता है, ''यदि उसे प्रभु का मार्ग और अच्छी तरह सिखाया जाए, तो वह प्रभु का कितना महान सेवक बन सकता है!'' यह हमें अपुल्लोस के अति सराहनीय गुण का ध्यान दिलाता है।

वह इतना घमण्डी नहीं था कि अपनी गलती न मानता (18:26)

एक बार सब्त के दिन, अक्विला और प्रिस्किल्ला इफिसुस के आराधनालय में गए।[15] अक्विला और प्रिस्किल्ला वही तम्बू बनाने वाले थे जिनसे हम अध्याय 18 में मिले थे। वे पौलुस के मित्र थे जो सिरीया के अन्ताकिया को जाते हुए इफिसुस में ठहरे थे (आयत 19)। यह आराधनालय सम्भवत: वही था जिसमें पौलुस का गर्मजोशी से स्वागत किया गया था (आयतें 19-21)। संदेश देने के समय वे हैरान रह गए जब एक अजनबी खड़ा होकर *यीशु* के बारे में (आयत 25) ''आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा''[16] (आयत 26क)। जब प्रिस्किल्ला और अक्विला[17] ने इस भावपूर्ण वक्ता को सुना, तो शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मे की बात जानता था और उद्धारकर्ता के बारे में उसका ज्ञान अधूरा था। प्रार्थना सभा के बाद वे ''उसे अपने यहां[18] ले गए और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक-ठीक बताया'' (आयत 26ख)। कोई संदेह नहीं कि उन्होंने यूहन्ना की भविष्यवाणियों से आरम्भ करके (मत्ती 3:11) उसे बताया कि वे भविष्यवाणियां कैसे पूरी हो चुकी थीं।

हम इस को एक पूरे पाठ के रूप में सिखा सकते हैं कि जब प्रिस्किल्ला और अक्विला ने किसी को गलत शिक्षा देते देखा तो उन्होंने क्या किया: (1) उनके पास यह जानने का पर्याप्त ज्ञान था कि बोलने वाला गलत था। (2) वे यह नहीं मानते थे कि ''जब तक कोई निष्कपट मन से'' सिखाता है, वह सही है। (3) उन्होंने यह नहीं कहा, ''काश! इसे सुधारने के लिए पौलुस यहां होता''; वे समझते थे कि उसे सिखाने की ज़िम्मेदारी उनकी भी उतनी ही है जितनी एक प्रचारक की। (4) उनका विश्वास अपुल्लोस के अच्छेपन में था। उन्होंने उसे गलत शिक्षा देने वाला बेईमान शिक्षक नहीं माना; स्पष्टत:, उन्होंने देखा कि वह एक ईमानदार व्यक्ति है जो किसी बात को मानने का इच्छुक था। (5) अपुल्लोस के बारे में दूसरों को बताने के बजाय, उसे अलग ले जाकर समझाने लगे (मत्ती 18:15)। (6) उन्होंने अपुल्लोस को लोगों के सामने बेइज्जत नहीं किया; बल्कि, उसे अकेले में, सम्भवत: अपने घर ले जाकर समझाया। (7) उन्होंने उसके साथ नम्रता व प्रेम से बात की (गलतियों 6:1)। गलत शिक्षा देने के लिए उसे भाषण देने के बजाय, उन्होंने ''परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक-ठीक *बताया*।'' (8) ''और भी ठीक-ठीक'' में शब्द ''और

भी'' मुझसे कहता है कि उन्होंने माना कि बहुत हद तक अपुल्लोस की शिक्षा ''ठीक'' थी। इस कारण, उसकी गलत शिक्षा पर आक्रमण करने के बजाय, उन्होंने उसी सच्चाई पर बात की, जो उसके पास पहले से थी। बात को *इस* प्रकार से सुलझाने के कारण वह प्रभु का और भी अच्छा सेवक बन गया।[19]

तथापि, कुछ देर के लिए, आइए इस अवसर को एक प्रचारक के दृष्टिकोण से देखें। कल्पना कीजिए कि आप अपुल्लोस हैं, जो एक ज्ञानवान और विद्वान वक्ता है। आप बड़ी इच्छा से एक आराधनालय में अपने सुनने वालों को समझाने की कोशिश करते हुए प्रचार कर रहे हैं। परन्तु, आपके श्रोताओं के कठोर चेहरों से यह स्पष्ट है कि उनमें से बहुतेरों ने अपने हृदय कठोर कर लिए हैं। प्रार्थना सभा के बाद, आप थक कर निराश हो जाते हैं; फिर एक दम्पत्ति आपको अपने घर बुलाते हैं। जब आप उनके घर आराम करने लगते हैं, तो बातचीत आपके प्रवचन की ओर मुड़ जाती है। इस दम्पत्ति में यह साहस है कि वे सुझाव दे सकें कि आपके प्रवचन में बहुत सी गलतियां थीं! इस सुझाव पर आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी? अपुल्लोस आसानी से यह उत्तर दे सकता था: ''मेरी आलोचना करने वाले, तुम होते कौन हो? मैंने यरूशलेम में सबसे बढ़िया शिक्षकों से सिकन्दरिया में पढ़ाई की! शास्त्रों के बारे में मेरा ज्ञान तुम से सौ गुणा अधिक है! तुम मुझे क्या सिखाओगे?''

यह तथ्य कि प्रिस्किल्ला और अक्विला अपुल्लोस को ''परमेश्वर का मार्ग ... और भी ठीक-ठीक'' बता सकते थे, हमें अपुल्लोस के मन की बात बताता है। यद्यपि वह बहुत पढ़ा लिखा था, परन्तु उसने यह कदापि नहीं सोचा कि वह सब कुछ जानता है। यद्यपि वह कुछ बातों को मानता था और निडर होकर उनका प्रचार करता था, परन्तु उसका मन उदार था और वह सुनने का इच्छुक था। सबसे बढ़कर वह सत्य से प्रेम करता था (2 थिस्सलुनीकियों 2:10); उसे अपने घमण्ड से अधिक सत्य से प्रेम था। इस कारण, जब प्रिस्किल्ला और अक्विला ने उसे सिखाया, तो वह मान गया कि वह गलत है। ऐसे गुण बहुत कम लोगों में होते हैं।

जब प्रेरितों 18:24-26 की बात होती है, तो आमतौर पर पूछा जाता है, ''जैसे अगले अध्याय में चेलों को दोबारा बपतिस्मा दिया गया-क्या अपुल्लोस को भी लेना पड़ा?'' एक घण्टे के विचार-विमर्श के लिए यह प्रश्न हमेशा अच्छा है,[20] और अन्त में कोई भी समझदार नहीं बनेगा।[21] इसलिए, सम्भवत: इसका हम पर प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं है (आज के समय तक किसी भी जीवित व्यक्ति ने यीशु के मृत्यु से पहले यूहन्ना का बपतिस्मा नहीं लिया था)। हम निश्चित रूप से इतना ही कह सकते हैं कि यदि अपुल्लोस को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता थी तो उसने लिया और नहीं थी तो नहीं लिया होगा। शास्त्र से यह स्पष्ट है कि यह प्रचारक परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए जो भी करने की आवश्यकता थी, वह करने को तैयार था।

हमारा क्या हाल है? क्या हमारे मन अपुल्लोस की तरह ईमानदार हैं? क्या हम किसी को सिखा सकते हैं? क्या हमारे मन खुले हैं? क्या हम इतने बड़े हो गए हैं कि सच्चाई और हमारे विश्वास में टकराव आने पर अपने घमण्ड को निकाल सकें और मान लें कि हम गलत हैं?

वह सेवकाई में बढ़ता गया (18:27, 28)

मैंने कुछ लोगों को ''परमेश्वर का मार्ग और भी ठीक-ठीक बताया'' जो मानते थे कि जो मैंने सिखाया वह सत्य था परन्तु उन्होंने अपने परिवार, मित्रों के भय अथवा किसी अन्य कारण से बदलने से इन्कार कर दिया। उनकी तुलना में, अपुल्लोस अपमान का मोल चुकाने के लिए तैयार था। मैं कल्पना करता हूं कि अगले सब्त के दिन वह आराधनालय में वापस आकर, अंगीकार करने लगा कि कई बातों में वह गलत था, और जो नई सच्चाई उसने सीखी थी, उसका प्रचार करने लगा। हममें से कइयों के विपरीत यह प्रचारक अपने ज्ञान और अपने प्रभु की सेवा में बढ़ता रहा।

कुछ देर बाद,[22] अपुल्लोस ने अपनी नज़र यूनान के इलाके अखया पर लगाई जहां पौलुस ने पहले काम किया था। ''और जब उसने निश्चय किया कि पार उतरकर अखया को जाए[23] तो भाइयों ने[24] उसे ढाढ़स देकर[25] चेलों को लिखा कि वे उससे अच्छी तरह मिलें''[26] (आयत 27क)। अपुल्लोस ने कुरिन्थुस में जाना था जहां पौलुस काम कर रहा था (19:1)।

कुरिन्थुस में पहुंचकर, अपुल्लोस ने उन सबके साथ काम किया जो पहले ही मसीही थे और उनके साथ भी जिन्हें मसीही बनने की आवश्यकता थी। पहले, उसने कलीसिया के लोगों की ''बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था''[27] (18:27ख)। कुरिन्थुस के मसीहियों ने उसे मन से स्वीकार कर लिया था (1 कुरिन्थियों 1:12; 3:4, 22; 4:6)।[28] जो कुछ उसने प्रिस्किल्ला और अक्विला से सीखा था वह उसके बड़े काम आया। वह ''पवित्र शास्त्र से प्रमाण दे देकर, कि यीशु ही मसीह है; बड़ी प्रबलता से यहूदियों को सब के साम्हने निरुत्तर करता रहा'' (आयत 28)। ये वही यहूदी थे जो पौलुस से घृणा करते थे और उसे गल्लियो के सामने लाए थे (आयतें 12-17)। अपुल्लोस को उनमें पौलुस से अधिक सफलता मिली होगी। यदि ऐसा था, तो इससे कलीसिया में अलग-अलग गुणों वाले प्रचारकों के महत्व का पता चलता है। यकीनन ही लूका की बातों में किसी प्रतिस्पर्धा या द्वेष की बात दिखाई नहीं देती। पौलुस ने बाद में कुरिन्थियों को लिखा: ''अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या? केवल सेवक, जिन के द्वारा तुम ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया। मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया'' (1 कुरिन्थियों 3:5,6)।

क्या मैं और आप अभी भी पवित्र शास्त्र के ज्ञान और अपने राजा की सेवा में बढ़ रहे हैं? ऐसा तो नहीं कि हम आत्मसंतोष में मस्त हैं? यीशु हमसे कहता, ''अपनी आंखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं'' (यूहन्ना 4:35); ''पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं'' (मत्ती 9:37)। प्रभु हमारी सहायता करे कि हम उसकी कटनी के लिए लाभदायक मजदूर बन सकें!

सारांश

प्रेरितों 18:23-19:1 में पहली और अन्तिम बार हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक में अपुल्लोस के बारे में पढ़ने को मिलता है। स्पष्टत: वह इफिसुस में गया, जहां वह पौलुस का मित्र बन गया (1 कुरिन्थियों 16:12)। बहुत देर के बाद, वह और एक भाई क्रेते को जाने के लिए तैयार थे जहां तीतुस, जो पौलुस के सहायकों में से एक था, काम कर रहा था (तीतुस 3:13)। उसके बाद, हमें अपुल्लोस के काम के बारे में कुछ पता नहीं चलता। परन्तु, मुझे यकीन है कि वह अपने बहुत से गुणों का यीशु के सुसमाचार को फैलाने के लिए इस्तेमाल करता रहा।

इस पूरे अध्ययन में मैंने संकेत दिया है कि हम अपुल्लोस की कहानी से बहुत से सबक सीख सकते हैं। अन्त में, मैं आपको दो शिक्षाएं याद दिलाऊंगा: (1) जब हम किसी को गलत शिक्षा देते या प्रचार करते सुनें, तो हमें चाहिए कि प्रिस्किल्ला और अक्विला की तरह गम्भीरता से उससे बात करें और उसे सच्चाई बताएं। (2) जब हमें परमेश्वर के मार्ग की और भी अधिक सही-सही शिक्षा की आवश्यकता होती है, तो हमें अपुल्लोस की तरह नम्र हो जाना चाहिए। यदि हम में से अधिकतर लोग प्रिस्किल्ला, अक्विला और अपुल्लोस के जैसे हो जाएं तो बहुत सी धार्मिक उलझनें और फूट जो हमारे आस-पास है, जल्द ही अलोप हो जाएगी।

प्रवचन नोट्स

आप यह पाठ अपुल्लोस के पात्र अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करना चाह सकते हैं। यदि आप ऐसा करते हैं, तो उसके बाद के काम को, विशेषकर कुरिन्थुस में उसके काम को विस्तार दीजिए। आप इस तथ्य को भी मिला लें कि मार्टिन लूथर (और अन्य) अपुल्लोस को इब्रानियों की पुस्तक का लेखक मानते थे, क्योंकि इस पुस्तक का तर्क विशेष रूप से सिकन्दरिया में तर्क और वाक्पटुता की कक्षाओं में सिखाया जाता था। ऐसा है या नहीं, परन्तु यह तथ्य कि कई लोग अपुल्लोस को इस सर्वोत्तम पुस्तक का लेखक मानते हैं, अपने आप ही उसकी योग्यता की गवाही देता है।

यदि आप प्रेरितों के काम में मन परिवर्तनों पर एक शृंखला में प्रचार करने का निर्णय लेते हैं (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 70 पर देखिए), तो आप इस पाठ की सामग्री की ''एक प्रचारक के मन परिवर्तन'' नकल कर सकते हैं। (याद रखें कि ''मन परिवर्तन'' का अक्षरश: अर्थ है ''बदलना'' [''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के ''एक जादूगर का मन परिवर्तन'' पाठ में देखिए])। आप नीचे दी गई सरल रूपरेखा का इस्तेमाल कर सकते हैं:

I. एक प्रचारक जिसका मन परिवर्तन आवश्यक था
   (क) इस प्रचारक में बहुत से अच्छे गुण थे।
   (ख) बपतिस्मे की शिक्षा पर वह गलत था।

II. एक प्रचारक जिसका मन परिवर्तन हो गया

(क) उसका मन परिवर्तन हो गया क्योंकि किसी ने उसकी गलती का सामना करन की चिन्ता की।

(ख) उसका मन परिवर्तन हो गया, क्योंकि वह इतना बड़ा था कि अपनी गलती को मान लिया।

24 से 26 आयतों का इस्तेमाल जवान प्रचारकों के लिए एक बहुमूल्य पाठ के रूप में किया जा सकता है। अन्तिम प्वायंट ''आपको सदा कुछ न कुछ सीखने को ही मिलता है'' होगा।

प्रिसकिल्ला और अक्विला द्वारा अपुलोस को दिए आठ विचारों को ''गलती करने वाले की परवाह'' पाठ के रूप में विस्तृत किया जा सकता है। उन लोगों के बारे में सोचकर जो मुझे लगता था कि गलत हैं मैं दुबकता हूं कि मैंने उन्हें कई बार वैसे नहीं सिखाया जैसे सिखाना चाहिए था। ''लचीला'' हुए बिना कुशल होना सम्भव है।

पाद टिप्पणियां

[1]मुझ पर सैकड़ों अच्छे-अच्छे सुसमाचार प्रचारकों का प्रभाव रहा है, इसलिए इस ''छोटी सी सूची'' में उनका नाम न लिख सकने के लिए मैं क्षमा चाहता हूं। यदि आप इस पाठ को एक प्रवचन के रूप में प्रस्तुत करना चाहें, तो आप अपनी पसन्द के प्रचारक का नाम जोड़ सकते हैं। [2]''अपुल्लोस'' ''अपोलोनियुस'' का संक्षिप्त रूप है। [3]यूनानी शब्द के अनुसार ''जन्म'' का अक्षरश: अर्थ ''कुल से'' है जिससे संकेत मिलता है कि अपुल्लोस का जन्म तथा पोषण सिकन्दरिया में हुआ था। [4]इस भाग में पृष्ठ 183 पर मानचित्र देखिए। [5]सिकन्दरिया संसार के शिक्षा के केन्द्रों में से एक था। इसमें विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय था जिसमें 7,00,000 के लगभग पुस्तकें थीं। [6]कई लोगों का मानना है कि सिकन्दरिया की कम से कम एक चौथाई जनसंख्या यहूदी थी। [7]फिलो पौलुस और अपुल्लोस का समकालीन था। [8]पौलुस और अपुल्लोस की पृष्ठभूमि कई बातों में एक समान थी: पौलुस का जन्म तरसुस में हुआ था, जो शिक्षा का केन्द्र था। बहुत से विद्वान थे जिन्होंने अपने आपको परमेश्वर के प्रति समर्पित किया था। और, हम से पहली बार मिलते समय दोनों ही गलत थे। [9]वाक्पटुता (बोलने की कला) सिकन्दरिया के स्कूलों में एक आवश्यक विषय था। [10]''मार्ग'' मसीहियत को कहा गया है, परन्तु वाक्यांश ''प्रभु के मार्ग'' केवल यूहन्ना बपतिस्मा (डुबकी) देने वाले की शिक्षा तक सीमित लगता है (मत्ती 3:3; मरकुस 1:3; लूका 3:4; यूहन्ना 1:23)।

[11]इस शब्द के और प्रयोग के लिए देखिए रोमियों 12:11. [12]वैस्टर्न टैक्सट से यह संकेत मिल सकता है कि अपुल्लोस को यूहन्ना के बपतिस्मे का पता सिकन्दरिया में चला। मेरे शिक्षक, जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने कहा कि सामाजिक लेखकों के अनुसार यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के कुछ चेलों ने यीशु को मसीहा (के रूप में) स्वीकार नहीं किया और वे ''यूहन्ना के सुसमाचार'' की शिक्षा देते रहे। [13]यूहन्ना को प्रचार किए हुए अब तक बीस-पच्चीस या इससे अधिक वर्ष बीत चुके थे, इसलिए यह एक रहस्य लगता है; परन्तु निश्चय ही यह सम्भव है कि उसका इन सभी वर्षों में किसी मसीही के साथ सम्पर्क नहीं हुआ। तथापि, इतने लम्बे समय के अन्तराल से पता चल सकता है कि अपुल्लोस को वर्षों पूर्व यूहन्ना से सीधे पता चलने के बजाय, हाल ही के वर्षों में यूहन्ना के किसी चेले से यूहन्ना के बपतिस्मे का पता चला था। [14]यूहन्ना के बपतिस्मे के बारे में अधिक जानकारी के लिए, अगला पाठ देखिए। [15]आमतौर पर ऐसा माना जाता है कि वे आराधना करने गए। शायद वे आराधना करने ही गए; जैसे पहले ध्यान दिया था, कि यह अवस्था परिवर्तन

काल था। तथापि, शायद वे वहां पौलुस की तरह भले मनों की तलाश करके उन्हें सिखाने के लिए गए थे। [16]पौलुस की तरह ही स्पष्ट है कि अपुल्लोस ने आराधनालय में जाकर एक नये समाज में अपना काम आरम्भ किया। [17]प्रिस्किल्ला का नाम पहले आना, आरम्भिक कलीसिया में उसके महत्व को बताता है। कई लोगों का मानना है कि उसका नाम पहले इसलिए आया ताकि एक प्रचारक को सुधारने में उसके सक्रिय योगदान पर कोई प्रश्न न उठे। अन्य शब्दों में, अक्विला और प्रिस्किल्ला अपुल्लोस को अपने घर ले गए, जब अपुल्लोस को समझाया जा रहा था तो प्रिस्किल्ला चाय और बिस्कुट नहीं ला रही थी। (जिन दिनों मैं एक जवान प्रचारक था, विश्वास में बड़ी बहनें-''परमेश्वर के मार्ग को और सही-सही'' बताने के लिए कई विषयों पर मुझे समझाती थीं)। तथापि, ध्यान दें, कि यह *अकेले में* शिक्षा देना है और औरत के पुलपिट पर से बोलने को किसी भी प्रकार से सही नहीं ठहराता। [18]यह कि वे उसे अपने घर खाना खिलाने के लिए ले गए, एक युक्तिसंगत अनुमान है। *घरों से सुसमाचार प्रचार* करने की आवश्यकता पर टिप्पणी के लिए यह एक अच्छी जगह हो सकती है। [19]यह बात उन नये प्रचारकों के लिए विशेष रूप से लागू हो सकती है जो अभी सीख रहे हैं। जवान प्रचारकों को ''सीधा करने'' के लिए कठोर दांवपेचों से कई लोग इतने निराश हो जाते हैं कि वे इस भले काम को छोड़ कर चले जाते हैं। [20]मेरे विचार से जिन लोगों को यीशु की मृत्यु से पूर्व यूहन्ना का बपतिस्मा मिला था, उन्हें कलीसिया की स्थापना के बाद पुन: बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं थी। अन्य शब्दों में, परमेश्वर ने स्वत: ही ''उन्हें कलीसिया में ले लिया था।'' इसका उत्कृष्ट उदाहरण प्रेरित हैं, जिन्हें यकीनन ही यूहन्ना का बपतिस्मा मिला था (लूका 7:29, 30; यूहन्ना 1:25-51; 3:22, 26; 4:1, 2)। पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों को जल में बपतिस्मा दिए जाने की बात पर मुझे संदेह है। फिर, यदि [अंग्रेजी अनुवादों में] आयत 25 में ''आत्मा'' शब्द पवित्र आत्मा के लिए है (देखिये पादटिप्पणी क्रम 11), तो इससे यह संकेत मिलेगा कि अपुल्लोस पहले से ही मसीही था और उसे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं थी। तथापि, मैं फिर ज़ोर देता हूं, कि यह सारी बातचीत एक अनुमान ही है, और किसी का विचार दूसरे पर थोपा नहीं जाना चाहिए।

[21]अन्य कठिनाइयों में, लूका ने यह नहीं बताया कि अपुल्लोस को यूहन्ना के बपतिस्मे का पिन्तेकुस्त के दिन से पहले या बाद में पता चला, या अपुल्लोस ने पिन्तेकुस्त के दिन से पहले या बाद में यूहन्ना का बपतिस्मा लिया था। अधिकतर परिचर्चाओं में यह माना जाता है कि अपुल्लोस ने पिन्तेकुस्त के दिन से *पहले* यूहन्ना का बपतिस्मा लिया था, परन्तु पवित्र शास्त्र इस बारे में कुछ नहीं बताता। [22]यह शायद प्रिस्किल्ला और अक्विला के साथ बातचीत के बाद की बात है। यदि ऐसा है, तो इससे यह समझाने में सहायता मिल सकती है कि प्रेरितों 19 वाले चेलों को केवल यूहन्ना के बपतिस्मे का ही पता था। [23]वैस्टर्न टैक्सट संकेत देता है कि इफिसुस में आने वाले कुरिन्थुस के मसीहियों ने अपुल्लोस का प्रचार सुना और उसे कुरिन्थुस में आने का निमन्त्रण दिया। एक और मानने योग्य बात यह है कि अक्विला और प्रिस्किल्ला ने अपुल्लोस को कुरिन्थुस की कलीसिया के बारे में बताकर वहां जाने की सलाह दी। [24]इससे संकेत मिलता है कि इफिसुस में पहले से ही एक मण्डली स्थापित थी। ''भाइयों'' ने अक्विला और प्रिस्किल्ला के साथ उनके या पौलुस के द्वारा बने मसीही सम्मिलित हो सकते हैं। कलीसिया सम्भवत: पहले ही अक्विला और प्रिस्किल्ला के घर में इकट्ठी होती थी (1 कुरिन्थियों 16:19)। [25]जब कोई भाई सुसमाचार का प्रचार करने के लिए कहीं और जाना चाहे, तो मुझे आशा है कि हम भी सदा उसे निराश नहीं बल्कि उत्साहित करेंगे! [26]एक से दूसरी मण्डली की ओर से किसी की पहचान के लिए पत्र भेजने का यह एक अच्छा उदाहरण है। पत्र के अन्त में अक्विला और प्रिस्किल्ला के नामों ने कुरिन्थुस की कलीसिया को काफ़ी प्रभावित किया होगा। [27]परमेश्वर के अनुग्रह ने उन्हें यीशु के बारे में जानने और मसीही बनने का अवसर दिया था। उनका उद्धार अनुग्रह से हुआ था। [28]यूनानी लोग वाक्पटुता में प्रसन्न रहते थे। यह भी एक कारण हो सकता है कि कइयों ने पौलुस से अधिक अपुल्लोस को प्राथमिकता दी (1 कुरिन्थियों 2:1)। तथापि, ऐसा कोई संकेत नहीं है कि अपुल्लोस ने अपनी सराहना करने वालों को एक नया गुट बनाने के लिए उत्साहित किया हो। पौलुस और अपुल्लोस प्रतिद्वन्द्वी नहीं थे; उनका रिश्ता बहुत गहरा था (1 कुरिन्थियों 16:12; तीतुस 3:13)।